B.A. Psychology Hons
Part-1. Paper-1st
Retroactive inhibion.

① B.A Part I (Psychology Hons)

PAPER I

Q — पृष्ठोन्मुख अवरोध (Retroactive inhibition) से आप क्या समझते हैं। पृष्ठोन्मुख अवरोध संबंधी विभिन्न सिद्धान्तों का संक्षिप्त मूल्यांकन करें।

Ans — पृष्ठोन्मुख अवरोध हमारे भूलने का एक प्रधान कारण है। यदि पृष्ठोन्मुख अवरोध का सरल अर्थ लिया जाए तो इसका आशय होगा पीछे की ओर होनेवाली रुकावट। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जब किसी विषय का सीखना उससे पहले सीखे गए विषय के पुन:स्मरण में बाधा पहुँचाता है, तो यह पृष्ठोन्मुख अवरोध कहलाता है। जैसे - यदि आप एक कविता सीखते हैं और उसके तुरन्त बाद टेलीविजन पर फिल्म देखने बैठ जाते हैं। अब यदि आप कविता का पुन:स्मरण करने लगें। तो देखी गई फिल्म की स्मृति आपको इसमें बाधा पहुँचाएगी। यही पृष्ठोन्मुख करने वाले अवरोध है। इस सिद्धान्त का समर्थन Muller and Pilzecker ने किया उनका कथन है कि विस्मरण की क्रिया केवल काल-व्यवधान के कारण निष्क्रिय रूप से नहीं होती है। किसी मौलिक विषय को सीखने एवं उसके प्रत्याह्वान के बीच की अवधि (धारण अवधि) में किसी दूसरे विषय से बने स्मृति-चिह्नों के प्रवेश करने से मौलिक विषय के स्मृति-चिह्न क्षीण हो जाते हैं अत: उसकी स्मृति खराब हो जाती है। पृष्ठोन्मुख अवरोध पर मौलिक शिक्षण के बाद सीखे जानेवाले कार्य (अन्तर्वेशित कार्य) के रूप मौलिक शिक्षण पर स्तर, अन्तर्वेशित कार्य की सामयिक स्थिति, उसकी मात्रा आदि का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

Skaggs, Ervin, MC Donald, Robinson आदि मनोवैज्ञानिकों के परीक्षणों से Retroactive Inhibition पर पड़नेवाले प्रभावों की पुष्टि हो चुकी है। इन विद्वानों पर प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर पृष्ठोन्मुख अवरोध संबंधी निम्नलिखित तीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन हुआ है। (क) प्रतिद्वंद्वीकरण सिद्धान्त.

Scanned with CamScanner

(ख) अनुक्रिया प्रतिद्वन्दिता या व्याघात सिद्धान्त, एवं (ग) द्वितत्व सिद्धान्त

(1) Preseveration or Anticonsolidation theory — जब कोई अन्य किसी मौलिक शिक्षण के स्मृति-चिह्नों के दृढ़ या स्थायी होने में बाधा उपस्थित करता है तो ये चिह्न स्थायी नहीं होने पाते। Muller and Pilzeckas द्वारा प्रतिपादित इस सिद्धान्त का आधार नाड़ी-संस्थान सम्बन्धी मानसिक जड़ता (Mental inertia) का मूल नियम है। इस नियम की मान्यता है। किसी उत्तेजना के विलोप होने के पश्चात भी उसका प्रभाव नाड़ी-संस्थान पर कुछ समय तक रहता है। इस नियम को आधार मानकर मनोवैज्ञानिकों ने तर्क दिया कि किसी विषय का शिक्षण समाप्त होने के पश्चात भी थोड़े समय तक उसके स्मृति-चिह्न संवेदी स्मृति कोष Sensory-Memory stone में रहते हैं। अतः एक विषय को सीखने के तुरन्त बाद जब दूसरा विषय सीखा जाता है। तब संवेदी स्मृति-कोष में पहले विषय के स्मृति-चिह्नों को दृढ़ होने का पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। अतः हम संबद्ध विषय को भूल जाते हैं। चूँकि इस सिद्धान्त में माना गया है कि स्मृति-चिह्नों के दृढ़ीकरण में बाधा पहुँचने के कारण स्मृति कमजोर होती है। इसलिए इसे प्रतिदृढ़ीकरण के सिद्धान्त का नाम दिया गया है।

(2) Response ~~compelting~~ competition theory — इस सिद्धान्त का प्रतिपादन Decamp & Webb ने किया था। इन मनोवैज्ञानिकों की मान्यता है कि किसी मौलिक शिक्षण के बाद यदि कोई अन्य विषय सीखा जाए तो यह दूसरा शिक्षण (अन्तर्वेशित शिक्षण) मौलिक शिक्षण के साथ प्रतिस्पर्धा करने लगता है। जिसके फलस्वरूप (अन्तर्वेशित शिक्षण) के प्रभाव से मौलिक शिक्षण का या तो प्रत्याह्वान नहीं हो पाता या फिर गलत प्रत्याह्वान होता है। मौलिक शिक्षण का प्रत्याह्वान कर विषयी के शिक्षण पर अन्तर्वेशित शिक्षण (interpolated learning) का प्रभाव देखा जा सकता है तथा इसकी जाँच भी की जा सकती है।

(3) Two Factor theory — इस सिद्धान्त का प्रतिपादन

Scanned with CamScanner

मेल्टन, लेकुन, इर्विन इत्यादि मनोवैज्ञानिक ने किया था। इन्होंने मौलिक शिक्षण के अधिगम पर अन्तर्वेशित शिक्षण के प्रभाव तथा अन्तर्वेशित शिक्षण तथा मौलिक शिक्षण के स्मृति-चिह्न नष्ट हो जाते हैं या दब जाते हैं। इनकी मान्यता यह भी है कि मौलिक तथा अन्तर्वेशित शिक्षण के स्मृति-चिह्नों के बीच के आपसी संघर्ष के फलस्वरूप मौलिक शिक्षण का प्रभाव क्षीण हो जाता है। इस सिद्धान्त में interpolated learning work का मौलिक शिक्षण पर two-sided प्रभाव पड़ता है। इसी कारण इसे two Factor theory कहा जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार मौलिक शिक्षण की स्मृति पर पृष्ठोन्मुख अवरोध का कुल प्रभाव इन दोनों तत्वों के संयुक्त प्रभाव से निश्चित होता है।

Milton and Evon ने भूलने के दो प्रमुख कारणों का उल्लेख किया,

(i) Competition Factor,
(ii) Unlearning Factor.

यही Two Factor theory के दो कारक हैं।

Two Factory theory यह स्पष्ट करने में समर्थ है कि मौलिक विषय और अन्तर्वेशित विषय में अन्तर होने पर भी पृष्ठोन्मुख अवरोध क्यों होता है। प्रयोगों में निरर्थक पदों के पश्चात प्रयोज्य को सार्थक पद सिखाए गए। इसमें घुसपैठ या उलझन का कोई प्रश्न नहीं था। फिर भी देखा गया कि, मौलिक पदों (निरर्थक पदों) का प्रत्याह्वान घट गया। यह सिद्धान्त बताता है कि ऐसा Unlearning के परिणामस्वरूप होता है।